अमर रहे यह पुष्टि पताका

अमर रहे यह पुष्टि पताका, अमर रहे इसका शुभनाम ।
अमर भावना से इसके प्रति, अविरत शत शत वार प्रणाम ।।

नील गगन-सी नवल[1] नीलिमा, जिसका व्यापक रूप महान,
पीत[2] छटा में पावन पुलकित, प्रमुदित सुन्दर स्वर्णविहान ।
भुवन मोहिनी जिसकी छाया, वरदायी विश्रुत विश्राम,
अमर भावना से इसके प्रति, अविरत शत शत वार प्रणाम ।।

जिसके मध्य सुवर्ण[3] सुदर्शन, चक्र सुराजित प्रतिभावान,
कर्मठता का बन प्रतीक जो, देता है संदेश महान ।
है इतिवृत्त अलौकिक जिसका, लक्ष्य बिन्दु अनुपम अभिराम ।
अमर भावना से इसके प्रति, अविरत शत शत वार प्रणाम ।।

प्रगति पंथ के पथिक प्रवर ये, चरणचिन्ह[4] जिसके गति मान ।
प्रबल प्रेरणा के अधिनायक, जन जन के गौरव अभिमान ।
है सर्वस्व समर्पित इस पर, तन मन और धरा धन धाम,
अमर भावना से इसके प्रति, अविरत शत शत वार प्रणाम ।।

वागीश्वर वल्लभ का इसमें, प्रतिबिंबित तात्विक सज्ज्ञान ,
"द्वैत सत्य है, किन्तु द्वैत का तिमिरावृत्त है मिथ्या ज्ञान" ।
परम शुद्ध अद्वैत भाव से हम सब करें कर्म निष्काम ।
अमर भावना से इसके प्रति, अविरत शत शत वार प्रणाम ।।

(र. श्री. पं. मदनलाल जोशी शास्त्री, साहित्यरत्न, मंदसौर)

---

१ परिषद् ध्वज के ऊपरी भाग का रंग गहन नीला है ।
२ नीचे वाला भाग गहरा पीत (केशरिया) है ।
३ ध्वज के मध्य में सुवर्ण रंग का एक चक्र तथा षट्कोण है ।
४ षट्कोण के मध्य लाल रंग का U (चरणचिन्ह) है ।

PH 2917/83
IIAS, Shimla
Library
PH 294.551 2 Ba 185
00015766
INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 15766
Date 25/10/66
SIMLA

परिषद् का एक वर्ष

गत वर्ष ता. २६-६-६४ को परिषद् कार्यकारिणी समिति की बैठक जतीपुरा में प्रतिवर्षानुसार हुई, जिसमें परिषद् के उच्च स्तरीय प्रचार प्रगति के सम्बन्ध में कुछ निर्णय लिये गये। इसी सत्र में कार्यकारिणी समिति ने परिषद् की प्रथम चर्चा-सभा भी आयोजित की।

उच्च-स्तरीय प्रचार--

इस सम्बन्ध में जो मुख्य बात कार्यकारिणी समिति में सोची गई वह यह थी कि परिषद् की कार्यकारिणी समिति अपनी त्रैमासिक मीटिंग क्रमशः देश के विभिन्न राज्यों के प्रमुख केन्द्रों में बारी-बारी से करे और इसी अवसर पर आस-पास के प्रदेश से सम्बन्धित वैष्णवों की एक या अधिक प्रचार सभाएं भी की जाएं। वहां परिषद् की शाखाएं स्थापित की जाएं तथा साधारण एवं आजीवन सदस्य बनाए जाएं।

परिषद् की कार्यकारिणी समिति ने इस वर्ष में उक्त प्रस्ताव पर सक्रिय अमल किया और इसके सुन्दर परिणाम निकले।

इन्दौर में प्रथम त्रैमासिक विशेषाधिवेशन-

उक्त प्रकार की प्रथम त्रैमासिक कार्यकारिणी समिति की मीटिंग तथा विशेषाधिवेशन इन्दौर में ता. २० व २१ दिसम्बर १९६४ को हुए। इन आयोजनों में परिषद् के अध्यक्ष-श्री पू. पा. गो. श्री ब्रजरायजी महाराज तथा गो. श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज एवं गो. श्री विट्ठलेशराय जी महाराज इन्दौर ने भाग लिया। विशेषाधिवेशन में आसपास के समस्त नगरों के वैष्णवों को निमंत्रित किया गया तथा वह अत्यन्त सफल रहा। गोस्वामि श्री विट्ठलेशराय जी महाराज की अध्यक्षता में मध्य प्रदेश शाखा स्थापित हुई। इसके तुरन्त बाद ही परिषद् के अध्यक्ष श्री पू. पा. गो. श्री ब्रजरायजी महाराज तथा प्रचाराध्यक्ष श्री पू. पा. गो. श्री रणछोड़ाचार्य जी महाराज ने आसपास के ग्रामों में प्रचार का दौरा भी किया। मध्य प्रदेश में प्रचार का यह क्रम प्रचाराध्यक्षश्री ने आगे भी बनाये रखा और उक्त दौरे के अतिरिक्त तीन और दौरे आपश्री ने मध्य प्रदेश के कई अन्य क्षेत्रों में किये। फलस्वरूप इन्दौर प्रदेश-शाखा के अन्तर्गत २५ शाखाएं इन्दौर के आसपास के मध्य प्रदेश के क्षेत्रों में स्थापित हुई हैं। इसके साथ ही कई साधारण सदस्यों के अतिरिक्त परिषद के नवीन आजीवन सदस्यों में बहुत ही सराहनीय वृद्धि हुई है। वह इस प्रकार हैः—इन्दौर में ४०, उज्जैन १५, पिपरिया १, आगर ५, धार ३, बड़ी पोलाय १, खरगोन २, बड़ोदिया ३, जीरापुर १, खुजनेर १५, ब्यावरा १४, खिलचीपुर ७, सनावद १ कुल १०८। तदतिरिक्त

मध्य प्रदेश को ४ आजीवन सदस्य बम्बई शाखा से भी इस अवधि में प्राप्त हुए। प्रचाराध्यक्ष श्री के इन प्रवासों में कतिपय शाखाओं में बाल-मन्दिर स्थापित किये गये तथा उज्जैन व इन्दौर में प्रतिदिन लाउड स्पीकर की सहायता से स्थानीय मन्दिर में मंगला के दर्शनों के समय सामूहिक पाठ की योजना प्रारम्भ हो चुकी है।

जतीपुरा में द्वितीय विशेषाधिवेशन–

कार्यकारिणी समिति की द्वितीय त्रैमासिक बैठक तथा विशेषाधिवेशन जतीपुरा में ही फरवरी १९६५ में हुए, क्योंकि उस समय पू. पा. तिलकायत श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज के उभय बाबा श्री के यज्ञोपवीत का भी शुभ अवसर था, जबकि समस्त गोस्वामि वर्ग तथा देश के कोने-कोने से सहस्त्रों की संख्या में वैष्णव वर्ग उपस्थित था। प्रचार की दृष्टि से यह अधिवेशन अति उपयोगी रहा, तथा इसी अधिवेशन में स्थानीय परिषद् शाखा के तत्वावधान में तिलकायतश्री को एक मानपत्र भी समर्पित किया गया। तिलकायत महाराजश्री ने परिषद् को आशीर्वाद देते हुए समस्त वल्लभीय सृष्टि से परिषद् को दृढ़ बनाने तथा उसके कार्यों में सक्रिय सहयोग देने की अपील की।

बम्बई में तृतीय त्रैमासिक विशेषाधिवेशन–

बम्बई का त्रैमासिक अधिवेशन सफलता की दृष्टि से अपने

आप में अद्वितीय रहा। इस अवसर पर प्रचाराध्यक्षश्री तथा परिषद् की बम्बई शाखा ने १४ दिन का एक कार्यक्रम आयोजित किया, जो ता. २-४-६५ से ता. १५-४-६५ तक रहा। इस कार्यक्रम के प्रमुख अंग थेः—

(१) श्रीमद्भागवत के मर्मज्ञ विद्वान् श्रीयुत पं. बद्रीनाथ जी शास्त्री, 'पंडित पंचानन' द्वारा श्रीमद्भागवत के दशमस्कंध श्रीसुबोधिनी जी टीका के आधार पर प्रातः एवं सायंकाल प्रवचन।

(२) प्रतिदिन सायंकाल "मानव जीवन में धर्म की उपयोगिता" इस विषय पर श्रीमद्गोस्वामि बालकों तथा देश के विभिन्न भागों से निमंत्रित विद्वानों के भाषण।

(३) श्रीमद्भागवत का अष्टोत्तर शत पारायण।

(४) श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध की लीलाओं का निरूपण करने वाले प्राचीन कलात्मक चित्रों का विशाल प्रदर्शन जो कि बम्बई की उच्च स्तरीय जनता में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ।

(५) प्रतिदिन रात्रि को रास-लीला, (श्रीमद्भागवत दशम स्कंध में श्रीकृष्ण जन्म से प्रारम्भ कर उद्धव प्रकरण तक के प्रसंगों का निरूपण करने वाली), जो कि उत्तम कलाकारों द्वारा प्रदर्शित की गई।

बम्बई के इस अधिवेशन में स्थानीय एवं बाहर से पधारे हुए कई गोस्वामि महानुभावों ने भाग लिया, सायंकालीन अधिवेशनों में प्रतिदिन उनके प्रवचन हुए तथा सबने एक स्वर से यह आव्हान किया कि संप्रदाय की प्रगति के अर्थ गोस्वामि वर्ग एवं वैष्णवों को साथ मिलकर संगठित रूप से कार्य करना अत्यावश्यक है ।

इस अवसर पर परिषद् के सहस्त्रों साधारण सदस्य तथा २०० आजीवन सदस्य वने । इस बम्बई अधिवेशन की एक सचित्र विस्तृत रिपोर्ट परिषद् के मुखपत्र 'श्री वल्लभ विज्ञान' के माध्यम से शीघ्र ही प्रकाशित होगी ।

बीकानेर विशेषाधिवेशन--

परिषद् ने अपना एक और विशेषाधिवेशन जुलाई में बीकानेर में करने का निश्चय किया था, किन्तु कुछ स्थानीय असुविधाओं के कारण स्थगित करना पड़ा । वह अब आगामी शीतकाल में होगा ।

इस बीच परिषद के अध्यक्ष श्री गो. श्री १०८ श्री ब्रजराय जी म. ने सौराष्ट्र और उत्तर गुजरात में भ्रमण कर परिषद् का बहुत सुन्दर प्रचार किया और करीब यहाँ ६००० सामान्य सदस्य तथा ५ आजीवन सदस्य भी बने । इसी अवसर में अहमदाबाद के आसपास के उपनगरों में भी अध्यक्ष श्री ने कई सभाएं आयोजित कीं और उनमें परिषद के ध्येय वैष्णव जनता को समझाए ।

परिषद् की इस समय देश के विभिन्न भागों में ६० शाखाएं हैं इनमें से कुछ के सिवाय सभी संप्रदाय के प्रचार प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। हमने इच्छा की थी कि इन सबकी एक संक्षिप्त रिपोर्ट यहाँ देवें, किन्तु पूर्ण जानकारी प्राप्त न हो सकने से तथा समयाभाव के कारण यह विचार भविष्य के लिये स्थगित रखा है।

पू. पा. श्री १०८ गोस्वामि श्री व्रजरमणलालजी महाराज (मथुरा) द्वारा परिषद् प्रचारः—महाराज श्री के शुभ प्रयत्नों से मथुरा में परिषद् की शाखा की स्थापना हो चुकी है जो कि अत्यन्त आवश्यक एवं समयोचित था। शाखा की दृढ़ता हेतु आप श्री ने ही इस शाखा का अध्यक्ष पद स्वीकार किया है तदर्थ परिषद् अत्यन्त आभारी है। वहाँ के दैनिक सत्संग मंडल के अपने प्रवचनों में भी आप श्री के द्वारा परिषद् के संगठन को दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

पू. पा. श्री १०८ गोस्वामी श्री मथुरेश्वरजी महोदय (सूरत) द्वारा परिषद् प्रचारः—आप श्री अपने प्रवास में परिषद् के हित में महत्वपूर्ण प्रचार कर रहे हैं। तथा अभी-अभी बुरहानपुर में एक बहुत सुदृढ़ शाखा का संगठन कर चुके हैं। आगे भी प्रवास में यही क्रम चालू है।

रचनात्मक कार्य

परिषद् ने रचनात्मक कार्य को आमूलतः प्रारंभ और विकसित करने की दृष्टि से सबसे प्रथम जतीपुरा में एक चर्चा सभा (Seminar) आयोजित की और उसमें संप्रदाय की सभी प्रमुख समस्याओं पर गोस्वामि बालकों तथा साँप्रदायिक विद्वानों एवं तज्ञों के क्या मत हैं, इस पर विचार किया। इस चर्चा में ८ विषय लिये गये :— (१) संगठन (२) शिक्षा (३) साहित्य सुरक्षा एवं प्रकाशन, (४) मंदिरों का संचालन (५) सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ (६) शोध अन्वेषण तथा इतिहास (७) ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा (८) प्रचार.

इन विषयों में जो विचार-धाराएं पाई गईं इनका संकलन 'चर्चा-सभा के निर्णय' नामक पुस्तिका में किया गया।

इसके शीघ्र बाद ही उक्त विषयों में लिये गये निर्णयों के आधार पर कार्यारंभ भी हुआ। इनमें से परिषद् के अध्यक्ष श्री एवं प्रचाराध्यक्ष श्री के व्दारा (१) संगठन तथा (२) प्रचार के संबंध में अब तक जो कार्य हुआ, उसका कुछ उल्लेख ऊपर आ चुका है।

परिषद् की कार्यकारिणी समिति ने अपने इन्दौर के अधिवेशन में उक्त चर्चा-सभा में सभी विषयों पर लिये गये निर्णयों पर विचार किया और यह उचित समझा कि कार्य-विभाजन करके इन विषयो में आगे प्रगति करने हेतु, विभिन्न

गोस्वामि बालकों से प्रार्थना की जाए कि वे संयोजक के रूप में एक एक विभाग को ग्रहण करें। तदनुसार निम्न व्यवस्था की गई :—

(१) **संगठन** संयोजक गो. श्री व्रजभूषणलालजी महाराज जामनगर

(२) **शिक्षा** ,, ,, श्री गोविन्दरायजी महाराज पोरबंदर
श्री मथुरेश्वरजी महोदय बडौदा

(३) **साहित्य सुरक्षा और प्रकाशन**—एतदर्थ तय हुआ कि इस विषय में प्रकाशकों, प्रकाशन ट्रस्टों, लेखकों, विद्वानों आदि के साथ पुनः एक विचार गोष्ठी रखी जाए।

(४) **मंदिरों का संचालन** संयोजक गो. श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज प्रथमेश

(५) **सांस्कृतिक प्रवृत्तियां** ,, ,, श्री गोपीनाथजी महाराज एवं मुकुन्दरायजी महाराज

(६) **शोध अन्वेषण तथा इतिहास** ,, ,, श्री व्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली

(७) **ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा** ,, ,, श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज

(८) **प्रचार** ,, ,, श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज

ऊपर नं. (३) में बताए अनुसार बंबई अधिवेशन के समय साहित्य सुरक्षा एवं प्रकाशन पर एक चर्चा सभा हुई तथा अनेक गोस्वामि बालकों एवं विद्वानों की उपस्थिति में इस विषय के सभी विशिष्ट अंगों-यथा (१) साहित्य सुरक्षा (२) प्रकाशन (३) अर्थ व्यवस्था आदि पर निर्णय लिये गये और ये निर्णय चर्चा-सभा द्वितीय शीर्षक पुस्तिका में अंकित कर दिये गये हैं। जिनको कार्यान्वित करने के दृष्टि से परिषद् की का. का. समिति विचार कर रही है।

चर्चा-सभा के अन्य विषयों में तत्तद् विभागों के संयोजकों के द्वारा नीचे लिखे अनुसार कार्य हुआ है।

(२) **शिक्षा** :—परिषद् निर्वाचित विद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री पू. पा. श्री १०८ गो. श्री गोविंदरायजी महाराज ने महाविद्यालय की अपनी एक योजना तैयार कर विद्यालय समिति की एक बैठक ता. २५-७-६५ को अहमदाबाद में आयोजित की इस बैठक में कुछ निर्णय लिये गये हैं जो कि जतीपुरा में होने वाली कार्य कारिणी समिति के इसी सत्र में स्वीकृत्यर्थ रखे जावेंगे।

तदुपरान्त परिषद के प्रचाराध्यक्ष श्री गो. श्री रणछोडा-चार्यजी महाराज को उज्जैन, कोटा और ग्वालियर में शिक्षालयों हेतु कुछ धन राशि प्राप्त हुई है। बालमंदिरों का उल्लेख ऊपर आ ही चुका है।

(५) **सांस्कृतिक प्रवृत्तियां–संगीत और कला** :—इस विभाग के संयोजक का भार पू. पा. गो. श्री गोपीनाथजी महाराज बम्बई तथा पू. पा. गो. श्री मुकुन्दरायजी महाराज बम्बई को दिया गया है तथा इस विषय में कार्यक्रम निर्धारण करने के लिये जतीपुरा में एक चर्चा सभा आयोजित की जा रही ही है।

(६) **शोध, अन्वेषण तथा इतिहास** :—इस विभाग क संयोजक पू. पा. श्री १०८ गो. श्री ब्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली ने एक प्रारूप तैयार कर परिषद् की कार्य कारिणी समिति के विचारार्थ दिया है, उस पर भी इसी सत्र में विचार होगा।

(७) **मंदिरों का संचालन** (८) **एतिहासिक स्थलों-की सुरक्षा** :—इन दोनों विभागों के संयोजक पू. पा. गो. श्री रणछोडाजार्यजी महाराज सक्रिय रूप से इन विभागों के लिये निर्धारित दिशाओं में प्रयत्नशील हैं।

श्री नाथद्वारा प्रकरण

रचनात्मक कार्यों में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य 'श्रीनाथ द्वारा प्रकरण' के विषय में किया गया। जैसा कि वैष्णव जनता को विदित है–राजस्थान विधान-सभा में एक गैर सरकारी बिल, श्री नाथद्वारा मंदिर अधिनियम में संशोधन करता हुआ, प्रस्तुत हुआ है। ये संशोधन सम्प्रदाय के पक्ष में

उचित समझे गये, तथा गैर सरकारी बिल होने के कारण वह गिर न जाए तदर्थ परिषद् के अन्तर्गत कार्य करने वाली 'श्री नाथद्वारा प्रकरण समिति' ने इस विषय में प्रशंसनीय प्रयास किया । इन प्रयासों में विशेष उल्लेखनीय नाम श्री नाथद्वारा प्रकरण समिति के अध्यक्ष श्री पू. पा. गो. श्री १०८ ब्रजभूषणलालजी महाराज जामनगर का है, जिनके प्रभाव एवं प्रयत्नों से इस प्रकरण को सुलझाने के लिये कई वर्षों से सतत प्रयत्न हो रहे हैं । तदतिरिक्त श्री आर. कलाधर भट्ट एम.ए., एल.एल.बी. तथा श्री नन्ददासजी परिषद् के मन्त्री, परिषद् की अनेक शाखाओं तथा वैष्णव महानुभावों ने सराहनीय प्रयत्न किये हैं । इन प्रयासों के फलस्वरूप स्थान-स्थान से सहस्त्रावधि तार व हस्ताक्षर तथा प्रतिवेदन राजस्थान शासन को, विधायकों को एवं प्रवर समिति के सदस्यों को भेजे गये तथा अनेक प्रकार से वैष्णव जनता में प्रचार कर जनमत प्रबल बनाने का प्रयत्न किया गया । अब तक इसके बहुत सुन्दर परिणाम निकले हैं । इस जनमत के प्रभाव से संशोधन बिल विधान सभा द्वारा प्रवर समिति के सुपुर्द कर दिया गया, इतना ही नहीं, प्रवर समिति ने इसे सर्वानुमति से स्वीकार भी कर लिया है । अब विधान सभा में इस पर चर्चा होगी, वैष्णन जनता को अभी भी इस विषय में संगठित होकर बहुत कुछ प्रयत्न करना शेष है, जिससे कि विधान-सभा भी उसे स्वीकार कर ले ।

मुख-पत्र

श्री वल्लभविज्ञान मासिक को परिषद् का मुख-पत्र स्वीकार कर लिया गया है और इस से परिषद् के संगठन एवं प्रचार कार्य में बड़ी मदद पहुँची है। परिषद् अब शीघ्र ही इसका गुजराती संस्करण भी निकालने के प्रयन्त में है। इस कार्य में पू. पा. गो. श्री मथुरेश्वर जी महोदय से सहयोग देने के लिये प्रार्थना की गई है।

आर्थिक दृष्टिकोण

प्राय: यह कहा जाता है कि परिषद् केवल प्रस्ताव करती है। उन्हें कार्यान्वित करने को पैसा है कहाँ ? अत: आर्थिक दृष्टिकोण से भी कुछ विचार करना आवश्यक है। परिषद् के स्थायी कोष मं ७४ आजीवन सदस्यों के रु. ७४००) स्थायी फंड में कई वर्षों से चले आ रहे हैं। चालू खर्च के लिए परिषद् को हमेशा द्रव्य की तंगी बनी रही, और कई बार उदार महानुभावों से विशेष रूप से सहायता लेकर कार्य चलाना पड़ा।

इस वर्ष में, जैसा कि ऊपर वताया गया है, ११२ आजीवन सदस्य केवल मध्यप्रदेश शाखा द्वारा तथा करीब २०० आजीवन सदस्य वम्बई शाखा द्वारा वनाये गये हैं। कलकत्ता एवं कुछ अन्य स्थानों में भी बने हैं उनका विवरण अभी प्राप्त नहीं है। इन १३२ सदस्यों से परिषद् के स्थायी कोष में रु. ३१२००) की वृध्दि हो जाएगी तथा साधा-

रण सदस्यों के आँकड़े अभी प्राप्त नहीं है, परन्तु विशेषकर परिषद के अध्यक्ष श्री गो. श्री व्रजरायजी महाराज के प्रयत्नों से साधारण सदस्यता फीस में भी सराहनीय वृध्दि हुई है। अन्य शाखाओं से भी धन प्राप्ति हुई है और इससे परिषद् की कार्यालयीन व्यवस्था में तथा शाखाओं के संचालन में सुचारु रूप से राहत तथा स्थिरता प्राप्त हो सकी है।

इस वर्ष के कार्यकाल में यह अनुभव हुआ है कि यदि श्रीमद् गोस्वामि बालकों तथा वैष्णवों के सहयोग समन्वय से रचनात्मक कार्य हाथ में लिये जावें तथा उचित रूप से प्रचार-प्रसार हो तो जैसा कि बम्बई के अधिवेशन ने सिध्द कर दिया है, संप्रदाय में उदार दानदाताओं की कमी नहीं है। केवल दो स्थानों में त्रैमासिक विशेषाधिवेशन के द्वारा जब रु० ३०,०००) से अधिक की द्रव्य राशि सुरक्षित निधि में प्राप्त हो सकी है, तो इसमें भिन्न-भिन्न प्रमुख नगरों में अधिवेशन करने से पर्याप्त वृध्दि हो सकेगी इसमें संदेह के लिए कोई स्थान नहीं है। तदुपरान्त निश्चित लक्ष्य यदि सामने होंगे तो उदार दानशील व्यक्ति अवश्य परिषद् के कार्यों में हाथ बटावेंगे ऐसा विश्वास है।

तात्कालिक लक्ष्य

परिषद् शीघ्र ही देश के किसी मध्यवर्ती स्थान, संभवत: व्रज-भूमि में एक ऐसा परिषद–केन्द्र स्थापित करना चाहती है, जहाँ से परिषद की प्रकाशन, प्रचार सम्बन्धी तथा साँस्कृ-

तिक शैक्षणिक प्रवृतियों का सुसंचालन होता रहे तथा कुछ ऐसे आवास भवन भी बनें जहाँ अवकाश प्राप्त परिषद् के सेवाभावी महानुभाव रह सकें और शिक्षा, प्रकाशन, प्रचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में परिषद् के कायो में सक्रिय रूप से योगदान दे सकें।

बम्बई की चर्चा-सभा में लिए गए निर्णयों के अनुसार परिषद् प्राचीन ग्रंथों की सुरक्षा के लिए एक केन्द्रीय संग्रहालय स्थापित करना चाहती है तथा सहकारिता या अन्य माध्यम से प्रकाशन कार्य अथवा प्रेस स्थापित करना चाहती है। प्रकाशन संस्थाओं, ट्रस्टों, दानदाताओं से परिषद् की यह अपील है कि वे परिषद् के साथ सहयोग समन्वय से कार्य करें तथा साम्प्रदायिक ग्रंथों के प्रकाशन के क्षेत्र में एक सर्व-सम्मत रूप से निश्चित योजनानुसार कार्यरत हो जावें।

अन्त में परिषद् सम्प्रदाय के अभ्युदय में रुचि रखने वाले सभी महानुभावों एवं विद्यमान संस्थाओं से सहयोग समन्वय की अपील करती है। परिषद् एवं अन्य सभी संस्थाएं यदि मिल-जुल कर अपने-अपने क्षेत्र में योजनाबध्द कार्य करें तो सम्प्रदाय को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में शीघ्र ही उल्लेखनीय गति प्राप्त होगी। श्री मद्वल्लभाचार्यचरण के असीम अनुग्रह से हमें निश्चय ही प्रोत्साहन तथा आवश्यक साधन प्राप्त होते रहेंगे, यह दृढ़ विश्वास है।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 15766
Date 25/10/66
SIMLA

निवेदक,
गोपालदास झालानी
प्रधान मंत्री

ध्वज-गीत

जय जय मंगल कारक जय हे, जय हे धर्म–पताका ।
जय जय वैष्णव नायक जय हे, जय हे पावन गाथा ।।

आकाश पे हम फहरायेंगे, नीचे न कभी झुकने देंगे ।
हो अमर शान इसकी जग में, इसके हेतु मिट जाएंगे ।।

जय जय वैष्णव नायक जय हे, जय हे पावन गाथा ।

श्री महाप्रभु और पुष्टि मार्ग के, ध्येय का विश्व रचायेंगे ।
जिसमें गूंजे जय धर्म हमारा, ऐसा कर दिखलायेंगे ।।

जय जय जन हितकारक जय हे, भारत धर्म पताका ।

जय हे ! जय हे ! जय हे !

★